Page No.:
Date: /

Quest. बाबर के आक्रमण के पूर्व भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन करें। (Describe the Political Condition of India on the eve of Babar Invasion.

Or बाबर के आक्रमण के पूर्व भारत की सामाजिक व आर्थिक दशाओं का वर्णन कीजिये। Describe the Political, Social and Economic Condition of India on the eve of Babar's invasion.

Ans. राजनीतिक दशा — बाबर के आक्रमण के पूर्व सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में पूरे भारत की दशा बहुत ही शोचनीय थी। सम्पूर्ण देश छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था। वे आपस में लड़कर अपनी शक्ति को नष्ट कर रहे थे। देश में कोई भी केन्द्रीय शक्ति ऐसी नहीं थी जो किसी बाहरी आक्रमणकारी को रोक सकती। देश में चारों ओर अशान्ति फैली हुई थी। जनता की किसी शासक को चिन्ता न थी। शासक स्वेच्छाचारी होते थे और उसकी आज्ञा ही कानून थी। Dr. Ishwari Prasad के अनुसार "India was a Congeries of States at the opening of the Sixteenth Century and likely to be the easy Prey of an invader who had the strength and will to attempt her Conquest."

श्री रशब्रुक विलियम ने अपनी पुस्तक "An Empire builder of the Sixteenth Century" में 15वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों का वर्णन करते हुए लिखा है कि "15 वीं शताब्दी में भारत का कोई इतिहास नहीं है और हिन्दुस्तान राज्यों के पृथक-पृथक समूहों में विभक्त हो चुका है।"

"During the 15th Century, there is no history of Hindustan, for Hindustan has become a mass of separate states".)

सभी राज्य छोटे-छोटे भागों में बंट गये। रश्ब्रुक विलियम के अनुसार मोटे रूप में भारत के राज्यों को चार भागों में बांटा जा सकता है (i) उत्तरी भारत के मुस्लिम राज्य जो सिंध से लेकर बंगाल तक एक अर्धवृत्ताकार (Semi Circle) की तरह फैले हुए थे जिसमें सिंध, मुल्तान, पंजाब, दिल्ली, जौनपुर और बंगाल आते थे। (ii) दक्षिण के मुस्लिम राज्य जिसमें गुजरात, मालवा, खानदेश व बहमनी राज्य आते थे (iii) राजपूताना (iv) विजयनगर एवं उड़ीसा। सुविधा की दृष्टि से इन्हें निम्न प्रमुख राज्यों में बांट सकते हैं

1. दिल्ली - यह भारत की राजधानी थी। यहाँ पर इब्राहीम लोदी राज्य करता था। वह 1517 ई० से यहाँ का शासक था। वह बहुत ही क्रूर, अयोग्य एवं अत्याचारी शासक था। उसकी नीतियों के कारण उसके सरदार उससे नाराज हो गये थे।

रश्ब्रुक विलियम के अनुसार "उसकी क्रूरता एवं अपराधों ने उसके पिता और बाबा के द्वारा किये गये उत्तम कार्यों को भी नष्ट कर दिया था। दिल्ली का राज्य विचलित हो चुका था और पंजाब व जौनपुर ने इब्राहीम लोदी के खिलाफ खुला विद्रोह कर दिया था। इब्राहीम लोदी पूर्णतः मनमानी कर रहा था। उसके सभी अमीर स्वतन्त्र होने का प्रयास कर रहे थे। जनता भी उसके व्यवहार से तंग आ गई थी। सेना में भी असन्तोष था और सभी उससे छुटकारा पाना चाहते थे।

2. पंजाब — यह दिल्ली राज्य का ही प्रांत था। यहाँ का शासक दौलत खाँ लोदी था। वह भी इब्राहीम लोदी से बड़ा नाराज था। वह अपने को स्वतंत्र शासक बनाना चाहता था। उसने इब्राहीम लोदी को पद से हटाने के लिए बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण दिया था।

3. मुलतान — यह दिल्ली से पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो चुका था। यहाँ का अफगान सूबेदार अपने पड़ोसी राज्य सिंध से लड़ने में लगा था। इसका दिल्ली राज्य से कोई सम्बन्ध नहीं था।

4. सिन्ध — यह प्रांत मोहम्मद तुगलक के समय में ही दिल्ली राज्य से निकल चुका था। यहाँ पर अब कई अमीरों का राज्य चल रहा था जो आपस में एक-दूसरे के शत्रु थे। अमीर शाह हुसैन मुलतान को जीतने की कोशिश में लगा था।

5. जौनपुर — मोहम्मद तुगलक के काल में यहाँ के सूबेदार ख्वाजाजहाँ ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया था। 1401-1440 मलिक-उस-शर्क (rising of Prince of the East) का राज्य हुआ। लोदी शासकों ने कुछ समय के लिए इसपर अपना अधिकार बनाये रखा था। अब यह स्वतंत्र राज्य था।

6. बिहार — यहाँ का शासक दरिया खाँ लोहानी था। वह यहाँ स्वतन्त्रता पूर्वक राज्य कर रहा था।

7. गुजरात — गुजरात में मुजफ्फर खाँ ने 1396 ई० में स्वतन्त्र राज्य की नींव डाली थी। इसकी विशेष उन्नति सुलतान महमूद बघर्रा के काल में हुई थी जिसने 1459-1551 तक राज्य किया था। मुजफ्फर शाह द्वितीय की मृत्यु के बाद बहादुर शाह यहाँ का शासक बन गया

Page No.:
Date:

था जो एक विशाल राज्य स्थापित करना चाहता था। उसने मालवा का कुछ भाग अपने राज्य में मिला लिया था। वह चित्तौड़ भी लेने का प्रयास करता रहा परन्तु जिस समय बाबर ने आक्रमण किया वह आन्तरिक संघर्षों में उलझा रहा।

रश्ब्रुक विलियम के अनुसार - "जब बाबर अपने 5वें आक्रमण में भारत में प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि गुजरात अपने आन्तरिक संघर्षों में व्यस्त था"

8. मालवा — मालवा गुजरात व चित्तौड़ के बीच एक महत्वपूर्ण राज्य था। यहाँ का शासक सुल्तान महमूद गुजरात व राजपूतों से उलझा हुआ था। मालवा 1401 ई० में स्वतन्त्र हुआ था। मालवा में राजपूतों के प्रभाव से राजनीतिक उथल पुथल हो रही थी।

9. चित्तौड़ — चित्तौड़ राजपूतों का सबसे प्रसिद्ध राज्य था। राणा कुम्भा के काल में चित्तौड़ की बड़ी शान थी। उसके काल में चित्तौड़ राज्य में 48 दुर्ग थे। उन्होंने मालवा व गुजरात को हराया था। 1509 ई० में संग्राम सिंह यहाँ का शासक था। उसे "The fragment of Soldier" कहते थे। उसने अनेक युद्धों में भाग लिया था। उसके जिस्म पर 80 जख्मों के निशान थे। युद्ध में उसकी एक आँख, एक टाँग, एक भुजा काम में आ चुकी थी।

रश्ब्रुक विलियम ने लिखा है "उसके शासन काल में मेवाड़ अपने गौरव की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।"

दिल्ली साम्राज्य की विखरता देखकर उसने भी सम्पूर्ण भारत पर हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की सोची थी। उसके राज्य की आय भी काफी थी।

10. काश्मीर — यहाँ पर 1339 ई० में शाह मिर्जा द्वारा स्वतन्त्र राज्य की स्थापना हुई थी। यहाँ का प्रमुख

Scanned with CamScanner

शासक जैनुल आबदीन (1420-1470) था। अब भी यहाँ मुस्लिम शासन था, यहाँ का सुल्तान अपने सरदारों के हाथों की कठपुतली था।

11. उड़ीसा — यह एक हिन्दू राज्य था। वह बंगाल व विजयनगर के राज्यों से युद्धों में उलझा था और बंगाल की ओर मुस्लिम राज्य के विस्तार को रोके रहा था।

12. बंगाल — फिरोज तुगलक के शासन काल में बंगाल पूर्ण स्वतंत्र राज्य बन गया। सिकन्दर लोदी ने बंगाल विजित का प्रयत्न किया था पर बाद में सन्धि हो गई थी इस समय यहाँ का शासक नुसरतशाह था जो एक योग्य शासक था।

13 खानदेश - दक्षिण के राज्यों में खानदेश भी एक प्रसिद्ध राज्य था। इसकी स्थापना मलिक फारुकी ने की थी। 1508 ई० के बाद यहाँ उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ गुजरात और अहमदनगर के शासक अपने-अपने ढंग से इसमें भाग ले रहे थे। दिल्ली से काफी दूर होने के कारण इसका महत्व कम था।

14 बहमनी राज्य — बहमनी राज्य की विशेष उन्नति उसके प्रधानमंत्री महमूद गावां के काल में हुई। बाद में यह राज्य पाँच भागों में बट गया था जो क्रमशः बरार (1484-1527) अहमद नगर (1489-1633) बीजापुर (1489-1689) गोलकुण्डा (1512-1688) तक स्वतंत्र रहे। पाँचवां राज्य बीदर का अस्तित्व बहुत कम समय तक रहा।

15 विजय नगर राज्य — दक्षिण में सबसे प्रसिद्ध राज्य विजयनगर था। यहाँ पर इस समय कृष्णदेव राय शासक था। इसकी वीरता के बारे में बाबर ने तुजुक-ए-बाबरी

Page No.:
Date:

में लिखा है "The most important of the pagan Princes in point of territory and army, is the Raja of vijaynagar." विजयनगर के शासक बहमनी से संघर्ष में उलझे हुए थे।

बाबर ने भी भारत की राजनीतिक दशा का वर्णन अपनी पुस्तक तुजुक-ए-बाबरी में किया है उसके अनुसार भारत में 5 प्रसिद्ध मुसलमान व दो प्रसिद्ध हिन्दू राज्य थे। वास्तव में बाबर के आक्रमण के समय राजनीतिक दृष्टि से भारत में राज्यों का एक जमघट था।

सामाजिक व सांस्कृतिक दशा — ~~एडवर्ड~~ एडवर्ड (Edward) व गैरट (Garret) के अनुसार भारत यद्यपि राजनीतिक दृष्टि से कई राज्यों में बंटा हुआ था, पर भक्ति आन्दोलन ने उनमें एकता ला दी थी। भक्ति आन्दोलन से हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के निकट आये थे। उस समय मुख्य रूप से निम्न सामाजिक अवस्था थी

1. सामाजिक वर्ग — भारत में मुख्य रूप से हिन्दू और मुस्लिम दो समाज थे। मोटे तौर से हम समाज को तीन वर्गों में बांट सकते हैं

I. सामन्तवादी समाज — इस वर्ग में सुल्तानों के बड़े बड़े अमीर, सरदार, काजी आदि आते थे। उनका रहन-सहन बड़े ठाठ-बाट का था। वे दरबारी रस्म में रहते थे। उनके अपने हरम होते थे वे खूब शराब पीते थे।

II. मध्यम वर्ग — समाज का दूसरा वर्ग मध्यम वर्ग का था। जिसमें राज्य कर्मचारी, सामन्त, मंत्री, हकीम विद्वान, व्यापारी वर्ग के लोग होते थे।

III. निम्न वर्ग — इसमें मजदूर, किसान वर्ग के लोग थे।

सामाजिक प्रथायें — समाज में अनेक प्रथायें प्रचलित

Scanned with CamScanner

आदि।
की / जैसे - सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या वध, जौहर
K.M Ashraf के अनुसार "उस समय के समाज में दो प्रमुख गुण थे - दान व वफादारी (Loyalty and Charity) अतिथि सत्कार भी बड़ा होता था, उसमें कुछ अवगुण भी थे जैसे शराब, अफीम और भांग का प्रयोग करना। जुआ भी खूब खेलते थे। समाज में वेश्यावृत्ति भी प्रचलित थी। बाबर ने भी अपने बाबरनामे में भारत की सामाजिक दशा का वर्णन किया है।

आर्थिक दशा — बाबर के आक्रमण से पहले भारत की आर्थिक दशा बड़ी सम्पन्न थी। भारत अत्यधिक धनवान और सम्पन्न देश था। भारत का व्यापार दूर-दूर तक के देशों के साथ होता था। चीन, इंग्लैंड, फ्रांस, पुर्तगाल, मलाया व अन्य देशों में भारत का व्यापार फैला हुआ था।

खेती-बाड़ी भारतीयों का मुख्य पेशा था। गेहूं, जौ, बाजरा, मटर, मक्का, चना, तिलहन-दलहन की खेती बड़े पैमाने पर होती थी। देश में कई प्रकार के उद्योग-धंधे भी कायम थे। कपड़े का मुख्य उद्योग था। सूती व रेशमी साड़ियाँ बहुत बनती थी। धातु के औजारों का भी बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था। चांदी, पीतल, तांबा, लोहे को मिला कर बहुत सारे सामान बनाए जाते थे। चमड़े और कागज उत्पादन का भी बड़ा-बड़ा उद्योग था। संक्षेप में भारत की आर्थिक दशा बड़ी उन्नत थी।

डा० आशीर्वादी लाल के शब्दों में "हमारा देश धन सम्पदा से इस प्रकार भरपूर था कि यहाँ की उष्ण जलवायु और गर्मियों में चलने वाली भयंकर लुओं से परेशान बाबर जैसे सुरुचि सम्पन्न शासक ने

भी अपनी डायरी में लिखा है कि भारतवर्ष की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ की सिक्कों के रूप में अथवा अन्य संचित रखी गई रूप में अपार स्वर्ण राशि थी।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि बाबर के आक्रमण से पूर्व भारत की राजनीतिक दशा बड़ी खराब थी, सामाजिक दशा पतनोन्मुख थी परन्तु आर्थिक दशा अत्यन्त समृद्ध और विकास की ओर अग्रसर थी।

Scanned with CamScanner

BABAR 1526-1530

Page No.:
Date:

Question - भारत पर आक्रमण के पूर्व बाबर के प्रारम्भिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं।

Give a brief account of the early career of Babar before his invasions of India.

Ans - जन्म तथा बचपन — बाबर भारत में मुगल वंश का संस्थापक था। उसका जन्म 14 फरवरी 1483 ई० को हुआ। बाबरनामा उसके इन वाक्यों से प्रारम्भ होता है "मैं रमजान के माह में 12 वर्ष की अवस्था में 899 हिजरी में फरगना का शासक बन गया। बाबर का पिता उमर शेख मिर्जा था और बाबर की नाड़ियों में मध्य एशिया के दो प्रसिद्ध वंशों का रक्त बह रहा था। प्रो० शर्मा के अनुसार "मंगोलों की क्रूरता और तर्कों की योग्यता तथा साहस का समन्वय" उसके रक्त में था। बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा तैमूर वंश की पांचवा वंशज था और उसकी माँ चंगेज वंश की थी जो 14वीं पीढ़ी में थी। उमरशेख मिर्जा के आठ सन्तानें थी जिनमें तीन लड़के बाबर, जहांगीर एवं नासिर थे एवं पाँच लड़कियां खानजादा बेगम, मिहर बेगम, शाहबानू बेगम, यादर सुल्तान बेगम एवं रोकय्या सुल्तान बेगम थी। बाबर इन सब में बड़ा था।

2. फरगना की रक्षा — फरगना उमर शेख मिर्जा की रियासत थी जो आज तुर्किस्तान का हिस्सा है। अन्दिजान उसकी राजधानी है। उसका राज्य 50,000 वर्ग मील में फैला था। 8 जून 1494 ई० को बाबर के पिता की मृत्यु हो गई। 12 वर्ष की उम्र में बाबर को शासक बना दिया गया। बाबर के बचपन के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है। उसके पिता की मृत्यु होते ही उसके रिश्तेदारों ने फरगना को हड़पने के लिए

Scanned with CamScanner

आक्रमण कर दिया। समरकन्द के शासक अहमद मिर्जा ने भी उसपर आक्रमण कर दिया लेकिन फरगाना की जनता ने बाबर का साथ देकर देश भक्ति का सबूत दिया।

बाबर के गद्दी पर बैठते ही उसको विकट परिस्थितियों ने घेर लिया। बाबर ने अहमद मिर्जा के सामने बातचीत के कुछ प्रस्ताव रखे, पर वह नहीं माना। तभी कुछ ऐसे कारण बने, जिनके कारण अहमद मिर्जा को पीछे हटना पड़ा।

1. अहमद मिर्जा फरगाना की प्रजा की देशभक्ति को देखकर घबरा गया।

2. दूसरे समरकन्द की सेना में घोड़ों की बीमारी फैल गई थी।

3. कावा नदी का पुल टूट जाने के कारण उसके बहुत से सैनिक मारे गये और वह खुद भी बिमार पड़ गया और वापस लौट गया।

बाबर का मामा सुल्तान महमूद भी परिस्थितियों का लाभ उठाना चाहता था। उसने अक्शी (Aksi) पर आक्रमण कर दिया। पर वहाँ पर बाबर के सेनानायकों ने उसका मुकाबला किया। अहमद की वापसी का समाचार सुन कर उसे भी निराशा हुई और वह भी वापस लौट गया।

3. राज्याभिषेक और शासन को मजबूत बनाना —
अहमद मिर्जा व सुल्तान महमूद के आक्रमण को विफल करने के बाद बाबर ने शासन को मजबूत किया। शासन व्यवस्था की स्थापना में बाबर की दादी अहसान दौलत बेगम ने उसकी बड़ी मदद की। राजधानी की व्यवस्था को सुधारने का भार हसन को दिया गया। अक्शी का किला कासिम खाँ को तथा मारघिलान की जागीर अलीदोस्त को दी गई थी।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

4. समरकन्द पर आक्रमण — बाबर केवल फरगाना की छोटी सी रियासत में प्रसन्न नहीं था वह भी अपने पिता की तरह ही समरकन्द का शासक बनना चाहता था जो विद्या और संस्कृति का केन्द्र था।

1494 ई॰ में समरकन्द का शासक अहमद मिर्जा की मौत हो गई। उसकी कोई सन्तान न थी। अतः गद्दी उसके छोटे भाई सुल्तान महमूद को मिली। महमूद फरगाना को भी हड़पना चाहता था। उसने राजधानी के रक्षक हसन को अपनी ओर मिलाने का पूरा षड्यन्त्र रचा लेकिन 1495 ई॰ में सुल्तान महमूद की भी मृत्यु हो गई और उसके पांचों लड़कों में गद्दी के लिए संघर्ष छिड़ गया।

बाबर भी समरकन्द की सभी घटनाओं को देख रहा था पर अभी उसके सम्मुख कई अन्य कठिनाइयाँ थी। फरगाना की सीमावर्ती प्रदेशों में बसे कबीले विद्रोह करते रहते थे तथा Tax भी ठीक से नहीं देते थे। खोजन्द का किला जो उसके पिता के अधिकार में था अब समरकन्द के अधिकार में चला गया था। इसी प्रकार औरातिपा का किला भी उसके अधिकार से निकल गया था। समरकन्द पर आक्रमण करने से पूर्व उसने इन समस्याओं को सुलझाया। बाबर ने विद्रोही कबीलों का दमन किया और उनसे 20,000 भेड़ें व 1500 घोड़ सवार प्राप्त किए। उसने खोजन्द को भी जीत लिया पर तिसरी समस्या अभी भी बनी रही। इन समस्याओं से कुछ मुक्ति पाकर बाबर ने समरकन्द की ओर ध्यान दिया। 1496 ई॰ में उसने समरकन्द पर आक्रमण किया परन्तु उसे सफलता नहीं मिली।

यह समरकन्द जीतने का उसका पहला प्रयास था पर अत्यधिक ठंड होने के कारण बाबर को समरकन्द के प्रथम आक्रमण में सफलता नहीं मिली।

5. समरकन्द में सौ दिनों का राज्य — मई 1497 ई॰ में उसने पुनः समरकन्द पर आक्रमण किया। वहाँ का शासक डरकर समरकन्द छोड़ कर भाग गया और बाबर वहाँ का शासक बन गया, परन्तु वह वहाँ सौ दिन ही राज्य कर सका शीघ्र ही अली हसन व तम्बल नामक दो अमीरों ने फरगाना में विद्रोह कर दिया। इस कारण बाबर के हाथ से फरगाना भी निकल गया। बाबरनामा के अनुसार — "इस प्रकार मैंने फरगाना के लिए समरकन्द को त्याग दिया। इस प्रकार मेरे हाथों से फरगाना और समरकन्द दोनों ही निकल गया"।

6 कष्टों का काल — (1497-1504) इन वर्षों में बाबर दर-दर की ठोकरें खाता फिरता रहा। उसके साथी भी कष्टों में उसका साथ छोड़ गये।

परिक्षता के अनुसार "भारत की गेंद या शतरंज के बादशाह की भांति वह इधर-उधर मारा फिरता रहा, जैसे समन्द्र के किनारे कंकड़-पत्थर धक्के खाते फिरते हैं"। 1498 ई॰ में उसने फरगाना पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया पर 1500 ई॰ में वह पुनः उसके हाथ से निकल गया। 1500-01 ई॰ में उसने समरकन्द पर तीसरी बार आक्रमण किया। उसने अपने दोनों चाचाओं की लड़की से विवाह किया जो पहले समरकन्द के शासक रह चुके थे। अब बाबर वहाँ का वैधानिक शासक भी बन गया था।

परन्तु उजबेग नेता शैबानी ने कोहिक नदी के किनारे सर ए पुल की लड़ाई में बाबर

को मार भगाया। इसके बाद बाबर पुनः पहले जैसा इधर-उधर घूमने लगा।

7. काबुल पर अधिकार — (1504 ई०) बाबर ने मध्य एशिया में कोई आशा न देखकर अफगानिस्तान में भाग्य आजमाने का निर्णय लिया। काबुल की स्थिति उसके पक्ष में थी। वहाँ का शासक उलुग बेग मिर्जा सन 1501 ई० में मर गया था और एक बच्चे को उसकी गद्दी पर बिठाया गया था। राज्य में सर्वत्र अराजकता थी। 1504 ई० में बाबर ने काबुल पर आक्रमण किया और बिना विरोध के वहाँ का शासक बन गया। उसने बादशाह की उपाधि धारण की। उसने कन्धार पर आक्रमण कर उसे भी जीत लिया। अपने छोटे भाई नासिर को कन्धार दे दिया पर कुछ समय बाद ही कन्धार उसके हाथों से निकल गया।

8. समरकन्द पर पुनः आक्रमण — बाबर की समरकन्द लेने की इच्छा समाप्त नहीं हुई थी परन्तु शैबानी के जीते हुए समरकन्द पर विजय प्राप्त करना बड़ा कठिन था। 1519 ई० में शैबानी फारस के शाह के हाथों हार गया। अतः बाबर ने पुनः समरकन्द पर आक्रमण कर दिया। बुखारा से खुरासान तक का समस्त प्रदेश उसने जीत लिया। इस समय उसका प्रदेश बहुत विस्तृत हो गया था लेकिन विद्रोहों के कारण वह 1513-14 ई० में काबुल लौट आया। अब बाबर ने भारत की ओर अपना ध्यान दिया। बाबर ने लिखा है— काबुल हिन्दुस्तान और खुरासान के बीच मध्य बिन्दु है। अतः अब भारत की ओर बढ़ने का निश्चय किया जिसमें वह पूर्णतः सफल रहा।